१

श्रीगणेशायनमः॥ अथगणपतिकवचप्रारंभः॥ मरीचिरुवाच॥ ध्या-
येत्सिंहगतंविनायकममुंदिग्बाहुमाद्येयुगेत्रेतायांतुमयूरवाहनममुंषड्-
बाहुकंसिद्धिदं॥ द्वापारेतुगजाननंयुगभुजंरक्तांगरागंविभुंतुर्येतु
द्विभुजंसितांगरुचिरंसर्वार्थदंसर्वदा॥१॥ विनायकःशिखांपातुपरमा
त्मापरात्परः॥ अतिसुंदरकायस्तुमस्तकंसुमहोत्कटः॥२॥ ललाटंका
श्यपःपातुभ्रूयुगंतुमहोदरः॥ नयनेभालचंद्रस्तुगजास्यस्त्वोष्ठ
पल्लवौ॥३॥ जिह्वांपातुगणक्रीडश्चिबुकंगिरिजासुतः॥ वाचंविनाय
कःपातुदंतान्रक्षतुदुर्मुखः॥४॥ श्रवणौपाशपाणिस्तुनासिकांचिंति
तार्थदः॥ गणेशस्तुमुखंकंठंपातुदेवोगणंजयः॥५॥ स्कंधौपातुगज

क॰

स्कंधः स्तनौ विघ्नविनाशनः ॥ हृदयं गणनाथस्तु हेरंबो जठरं महान् ॥ ६ ॥
धराधरः पातु पार्श्वे पृष्ठं विघ्नहरः शुभः ॥ लिंगं गुह्यं सदा व्यातु वक्रतुं
डो महाबलः ॥ ७ ॥ गणक्रीडो जानुजंघा ऊरु मंगलमूर्तिमान् ॥ एकदंतो
महाबुद्धिः पादौ गुल्फौ सदावतु ॥ ८ ॥ क्षिप्रप्रसादनो बाहु पाणी आशा
प्रपूरकः ॥ अंगुलीश्च नखान्पातु पद्महस्तो रिनाशनः ॥ ९ ॥ सर्वांगानि
मयूरेशो विश्वव्यापी सदावतु ॥ अनुक्तमपि यत्स्थानं धूमकेतुः सदाव
तु ॥ १० ॥ आमोदः स्त्वग्रतः पातु प्रमोदः पृष्ठतोवतु ॥ प्राच्यां रक्षतु बु
द्धीश आग्नेयां सिद्धिदायकः ॥ ११ ॥ दक्षिणस्यामुमापुत्रो निर्ऋत्यां तु ग
णेश्वरः ॥ प्रतीच्यां विघ्नहर्ताव्याद्वायव्यां गजकर्णकः ॥ १२ ॥ कौबेर्यां

निधिपः पायाच्छ्मशान्यामीशानंदनः ॥ दिवाव्यादिक इंतस्करात्रौ संध्यासु विघ्नहृत् ॥ १३ ॥
राक्षसासुरवेतालग्रहभूतपिशाचतः ॥ पाशांकुशधरः पातु रजःसत्वंतमःस्मृतिं ॥ १४ ॥ धी
ज्ञानं धर्मं च लक्ष्मीं च रूजां कीर्तिं दयां कुलं ॥ वपुर्धनं च धान्यं च गृहं दारान्सुतान्सखीन् ॥ १५ ॥
सर्वायुधधरः पौत्रान्मयूरेशोवतात्सदा ॥ कपिलोजाविकं पातु गजाश्वान्विकिटोव
तु ॥ १६ ॥ भूर्जपत्रे लिखित्वेदं यः कंठे धारयेत्सुधीः ॥ न भयं जायते तस्य यक्षरक्षःपिशा
चतः ॥ १७ ॥ त्रिसंध्यं जपते यस्तु वज्रसारतनुर्भवेत् ॥ यात्राकाले पठेद्यस्तु निर्विघ्नेन फ
लं लभेत् ॥ १८ ॥ युद्धकाले पठेद्यस्तु विजयं प्राप्नुयाद्ध्रुवं ॥ मारणोच्चाटनाकर्षस्तंभ
मोहनकर्मणि ॥ १९ ॥ सप्तवारं पठेद्यस्तु दिनानामेकविंशतिः ॥ तत्तत्फलमवाप्नोति
साधुवैनात्र संशयः ॥ २० ॥ एकविंशतिवारं च पठेत्तावद्दिनानि यः ॥ कारागृहगतं

सद्योरत्नावध्यं च मोचयेत्॥२१॥ राजदर्शनवेलायां पठेद्यस्तु त्रिवा
रतः॥ स राजानं वशं नीत्वा प्रकृतिं च सभांजयेत्॥२२॥ इदं गणेशक
वचं कश्यपेन समीरितं॥ मुद्गलाय च ते नाथ मांडव्याय महर्षये॥२३
मह्यं स प्राह कृपया कवचं सर्वसिद्धिदं॥ न देयं भक्तिहीनाय देयं श्र
द्धावते शुभे॥२४॥ अनेनास्य कृता रक्षा न बाधास्य भवेत्क्वचित्॥
राक्षसासुरवेतालादैत्यदानवसंभवा॥२५॥ इति गणेशपुराणे
उत्तरकांडे गणेशकवचं नाम पंचाशीतितमोऽध्यायः॥८५॥ श्रीग
॥
जाननार्पणमस्तु॥

3

'बस यूं ही ।'

'अच्छा, अच्छा ।' सरजू ने उसे रोक लिया—'जल पान तो करते जाओ ।'

'नहीं भय्या ! मुझे घर जल्दी पहुँचना है । वेला मेरी राह देख रही होगी । आज रात वह उस तालाब के पास वाले खंडहर में यशपाल से मिल रही है···।' एकदम कहते-कहते वह चौंक पड़ा । उसका मुँह खुला का खुला रह गया, और वह अपनी फटी-फटी नजरों से सरजू को देखते हुए घबरा कर बोला—

'नहीं, नहीं । यह सब मैंने झूठ कहा है । मैं तो असल में गिट्टू और लट्टू से यूं ही मिलने चला आया था ।'

'तो फिर तुम इतना घबरा क्यों रहे हो ?' सरजू मुस्कराया ।

मट्टू बड़ी घबराहट में वहाँ से बिना कुछ कहे आगे बढ़ गया । सरजू ने आवाज लगाई—

'अरे ! जलपान तो करते जाओ मट्टू भय्या···।'

वह मुस्करा रहा था और उसकी इस मुस्कराहट में न जाने कितने व्यंग, पाप और नीचता छिपी हुई थी ।

★ ★ ★

'यह खुशखबरी सुनाई है तुमने मेरे यार ।' नन्दू मारे प्रसन्नता के पागल हो गया—'अब देखता हूँ ।' वह शब्दों को चबा रहा था ।

तभी उसने सरजू से कहा—'तुम अब एक काम करो । कोशिश करो कि यशपाल का बच्चा वहाँ पहुँचने ही न पाये । आज रात मैं उस खंडहर में वेला के दिल की धड़कनें बड़े आराम के साथ गिनना चाहता हूँ ।'

यह कह कर उसने अपनी जेब से दस-दस के पाँच नोट निकाले और वह उन नोटों को सरजू की ओर बढ़ाते हुए बोला—

'चाहे तुम लोगों की जान चली जाए, परन्तु यशपाल को

आज रात खंडहर की सूरत देखनी नसीब न हो।' फिर वह सरजू की आंखों में आँखें डाल कर बोला—'समझे।'

'समझ गया···।' सरजू का उत्तर था।

बेला को खंडहर में पहुँचते थोड़ी सी देर हो गई। बात यह थी कि आज रात उसके बापू न जाने क्यों सो ही नहीं रहे थे। यह बार-बार भगवान से दुआएँ मांगती—'ईश्वर दया कर मेरे हाल पर। बापू की आँखों में नींद भेज दे। बहुत देर हो गई है मुझे। यशपाल मेरे इन्तजार में बेचैन हो रहा होगा! उसकी आंखें मेरे रास्ते पर जमे-जमे पथराने लगी होंगीं। तारे गिन-गिन कर उसका सिर चकराने लगा होगा। आशा और निराशा के बीच लटके-लटके उसका दिल निढाल हो गया होगा और वह सोचने लगा होगा कि शायद बेला अब न आयेगी। वह मुझे बेवफा समझ रहा होगा। वह सोचने लगा होगा कि स्त्री जाति मक्कार दगाबाज और फरेबी होती है। वह न जाने क्या क्या सोच रहा होगा मेरे बारे में। इतनी देर में न जाने उसकी आँखों से कितने ही आंसू जमीन पर गिरे होंगे और वह ठंडी सांसों से उन आँसुओं का हिसाब कर रहा होगा। हे ईश्वर! दया कर हम अभागों पर।'

सोचते-सोचते उसकी स्वयं की आँखों में भी मजबूरी और लाचारी के आँसू आ गये। वह अपना दिल थाम कर बैठ गई।

उसके बापू अभी तक जाग रहे थे। पलंग पर पड़े वह करवटें बदल रहे थे, और वह अपनी कोठरी के दरवाजे से लगी उस आने वाली घड़ी का इन्तजार कर रही थी जब कि वह सो चुके हों और वह पूर्ण सावधानी के साथ घर से बाहर निकल रहे हों।

धीरे-धीरे उसे दरवाजे से लगे-लगे एक घंटा बीत गया और

तब कहीं जाकर उसका बाप सोया। कहाँ तो यह वह सोच रही